● सुनो, समझो और सुनाओ :

१०. दिव्यांग

– संजय भारद्‌वाज

जन्म : ३० नवंबर १९६५ पुणे (महा.) **रचनाएँ :** योंही, मैं नहीं लिखता कविता, चेहरे **(कविता संग्रह)**, एक भिखारिन की मौत **(नाटक)**
परिचय : हिंदी प्रचार-प्रसार में विशेष अभिरुचि, रंगमंच से जुड़ाव, प्रखर लेखक एवं वक्ता के रूप में जाने जाते हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने दृष्टि दिव्यांगों की अशक्ति-शक्ति को निरूपित करते हुए समाज से समदृष्टि अपनाने की अपेक्षा की है ।

आँखें, जिन्होंने देखे नहीं
कभी उजाले
कैसे बुनती होंगी आकृतियाँ
भवन, झोंपड़ी
सड़क, फुटपाथ,
बादल, बारिश,
चूल्हा, आग,
पेड़, घास
धरती या आकाश की,
'रंग' शब्द से
कौन-से चित्र बनते होंगे
मन के दृष्टिपटल पर,
भूकंप से कैसा विनाश चितरता होगा,
बाढ़ की परिभाषा क्या होगी,
इंजेक्शन लगने से पहले भय से आँखें मूँदने का
विकल्प क्या होगा,
आवाज को घटना में बदलने का
पैमाना क्या होगा,
कुछ भी हो, इतना निश्चित है
ये आँखें बुन लेती हैं अद्‌वैत भाव,
समरस हो जाती हैं प्रकृति के साथ,
काश हो पातीं वे आँखें भी
अद्‌वैत और समरस
जो देखती तो हैं उजाले
पर बुनती रहती हैं अँधेरे !

64HBZV

❑ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ कविता का पाठ करें । उचित तान-अनुतान के साथ कविता का पाठ करवाएँ । कविता में आए भाव एवं विचारों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें । इस प्रकार की कोई कविता लिखवाएँ ।